

HINDI FILE



**DREAM**  
FOR NATION



**DARE**  
TO SERVE



**DELIVER**  
WITH INTEGRITY

# DAILY PRACTICE QUESTIONS

**BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM**

DATE : **JULY 22, 2026**



Comprehensive  
Coverage



Exam-Focused  
Analysis



Concept Clarity  
& Insights



Practice MCQs  
with Explanation



Daily Updates,  
Better Results



**CONTACT INFO:**

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



**EMAIL ID:**

info@sixsigmaias.com



**WEB PAGE:**

www.sixsigmaias.com



**ADDRESS:**

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,  
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

## दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

**Q1. उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के दौरान वैचारिक विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने मुख्य रूप से इसलिए प्रतिनिधि संस्थाओं की मांग की क्योंकि उनका मानना था कि संवैधानिक सुधार अंततः भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवादी हितों को मजबूत करेंगे।
2. प्रारंभिक राष्ट्रवादियों द्वारा आगे बढ़ाई गई आर्थिक आलोचना ने भारत की बढ़ती गरीबी को केवल उच्च कराधान से ही नहीं, बल्कि समकक्ष आर्थिक रिटर्न के बिना धन के निरंतर बाहरी हस्तांतरण से भी जोड़ा।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई नहीं
- (d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

**उत्तर:** (a) केवल एक

**स्पष्टीकरण:**

- **कथन 1 गलत है।** प्रारंभिक राष्ट्रवादियों ने प्रतिनिधि संस्थाओं की मांग इसलिए की क्योंकि उनका मानना था कि अधिक भारतीय भागीदारी से उत्तरदायी शासन सुनिश्चित होगा, प्रशासनिक ज्यादतियां कम होंगी, और अंततः भारत स्वशासन के लिए तैयार होगा। उनका उद्देश्य साम्राज्यवादी हितों को मजबूत करना नहीं बल्कि भारतीय राजनीतिक अधिकारों को सुरक्षित करना था।
- **कथन 2 सही है।** विशेष रूप से दादाभाई नौरोजी द्वारा प्रतिपादित 'धन की निकासी के सिद्धांत' (Drain Theory) ने तर्क दिया कि भारत की गरीबी गृह प्रभारों (Home Charges), पेंशन, वेतन, मुनाफे और प्रेषण (remittances) के माध्यम से विदेश में धन के बिना किसी प्रतिदान (unrequited transfer) के हस्तांतरण के कारण हुई थी। यह केवल भारी कराधान की आलोचना करने से कहीं आगे था।

**मूल्य संवर्धन (Value Addition):**

- आर्थिक राष्ट्रवाद स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे मजबूत बौद्धिक आधारों में से एक बन गया।
- उदारवादी चरण के दौरान संवैधानिक आंदोलन और आर्थिक आलोचना साथ-साथ विकसित हुईं।

**Q2. निम्नलिखित में से कौन सा इस बात की सबसे अच्छी व्याख्या करता है कि किसी विक्षोभित (disturbed) पारिस्थितिकी तंत्र में पारिस्थितिक अनुक्रमण (ecological succession) सामान्यतः अधिक पारिस्थितिकी तंत्र स्थिरता की ओर क्यों ले जाता है?**

- (a) प्रजाति विविधता में अनिवार्य रूप से गिरावट आती है, जिससे अंतर-विशिष्ट प्रतिस्पर्धा कम हो जाती है।

(b) खाद्य जालों की बढ़ती जटिलता पर्यावरणीय विक्षोभों के खिलाफ लचीलेपन (resilience) को बढ़ाती है।

(c) शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता संतुलन तक पहुँचे बिना लगातार बढ़ती रहती है।

(d) अपनी तीव्र प्रजनन दरों के कारण अग्रणी प्रजातियाँ (pioneer species) स्थायी रूप से पारिस्थितिकी तंत्र पर हावी रहती हैं।

**उत्तर:** (b) खाद्य जालों की बढ़ती जटिलता पर्यावरणीय विक्षोभों के खिलाफ लचीलेपन को बढ़ाती है।

#### स्पष्टीकरण:

- पारिस्थितिक अनुक्रमण के परिणामस्वरूप सामान्यतः बढ़ी हुई जैव विविधता, निकेत (niche) विशेषज्ञता और जटिल पोषण संबंधी अंतःक्रियाएं होती हैं।
- जटिल खाद्य जाल वैकल्पिक ऊर्जा मार्ग प्रदान करते हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र प्रजातियों के लुप्त होने और पर्यावरणीय उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक लचीला हो जाता है।
- प्रजातियों की विविधता आमतौर पर घटने के बजाय बढ़ती है।
- शुद्ध प्राथमिक उत्पादकता अनिश्चित काल तक नहीं बढ़ती है; परिपक्व पारिस्थितिकी तंत्र गतिशील संतुलन (dynamic equilibrium) के करीब पहुंचते हैं।
- अग्रणी प्रजातियों को धीरे-धीरे बाद के अनुक्रमण समुदायों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया जाता है।

#### मूल्य संवर्धन:

- स्थिरता से तात्पर्य प्रतिरोध (resistance) और लचीलेपन (resilience) से है।
- चरमोत्कर्ष समुदाय (climax communities) स्थिर के बजाय गतिशील संतुलन बनाए रखते हैं।

#### Q3. सार्वजनिक वित्त और राजकोषीय प्रबंधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पूंजीगत व्यय में वृद्धि से उसी वित्तीय वर्ष में राजकोषीय घाटे में वृद्धि होना अनिवार्य है।
2. राजस्व व्यय भौतिक परिसंपत्तियों का निर्माण नहीं करता है, भले ही वह दीर्घकालिक आर्थिक विकास में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दे सकता है।
3. यदि राजस्व वृद्धि व्यय वृद्धि से अधिक हो जाती है, तो पूर्ण सरकारी व्यय में वृद्धि के बावजूद राजकोषीय समेकन (fiscal consolidation) हो सकता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

**उत्तर:** (b) केवल दो

**स्पष्टीकरण:**

- **कथन 1 गलत है।** यदि उच्च राजस्व, परिसंपत्ति का मुद्रीकरण (asset monetisation), या व्यय को तर्कसंगत बनाने के माध्यम से वित्तपोषित किया जाए, तो पूंजीगत व्यय के लिए राजकोषीय घाटे में वृद्धि होना आवश्यक नहीं है।
- **कथन 2 सही है।** शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, अनुसंधान और कौशल विकास पर व्यय, हालांकि राजस्व व्यय के रूप में वर्गीकृत है, लेकिन यह मानव पूंजी और दीर्घकालिक उत्पादकता को बढ़ाता है।
- **कथन 3 सही है।** राजकोषीय समेकन सकल घरेलू उत्पाद (GDP) या राजस्व वृद्धि के सापेक्ष राजकोषीय संकेतकों में सुधार पर निर्भर करता है, न कि केवल व्यय को कम करने पर।

**मूल्य संवर्धन:**

- पूंजीगत व्यय उत्पादक परिसंपत्तियों का निर्माण करता है।
- राजस्व व्यय में वेतन, सब्सिडी, ब्याज भुगतान और सामाजिक सेवाएं शामिल हैं।
- व्यय की गुणवत्ता अक्सर उसके वर्गीकरण से अधिक महत्वपूर्ण होती है।

**Q4. भारत में संवैधानिक शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. प्रत्येक संवैधानिक प्राधिकरण अपना अस्तित्व और शक्तियाँ दोनों सीधे संविधान से प्राप्त करता है।
2. संसद उन संवैधानिक प्राधिकारियों की सेवा शर्तों को विनियमित कर सकती है जहाँ संविधान इसके लिए स्पष्ट रूप से अधिकृत करता है।
3. सभी सांविधिक निकाय (statutory bodies) कार्यपालिका के अधीन होते हैं और अर्ध-न्यायिक शक्तियों का प्रयोग नहीं कर सकते हैं।
4. संवैधानिक प्राधिकारियों की स्वतंत्रता केवल निश्चित कार्यकाल और कठिन निष्कासन प्रक्रियाओं के माध्यम से सुरक्षित होती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

**उत्तर:** (b) केवल दो

**स्पष्टीकरण:**

- **कथन 1 गलत है।** जबकि संवैधानिक निकाय अपना अस्तित्व संविधान से प्राप्त करते हैं, लेकिन सभी शक्तियाँ उसमें पूरी तरह से प्रदान नहीं की गई हैं; जहाँ संवैधानिक रूप से अनुमति हो, संसद शक्तियों की पूर्ति कर सकती है।



- **कथन 2 सही है।** संविधान कई मामलों में संसद को सेवा शर्तों और अन्य परिचालन विवरणों को निर्धारित करने के लिए स्पष्ट रूप से अधिकृत करता है।
- **कथन 3 गलत है।** ट्रिब्यूनल और नियामक आयोग जैसे कई सांविधिक निकाय, कानून द्वारा बनाए जाने के बावजूद अर्ध-न्यायिक शक्तियों का प्रयोग करते हैं।
- **कथन 4 गलत है।** स्वतंत्रता वित्तीय स्वायत्तता, नियुक्ति प्रक्रियाओं, निष्कासन सुरक्षा उपायों, वेतन संरक्षण और परिचालन स्वतंत्रता सहित कई सुरक्षा उपायों के माध्यम से सुनिश्चित की जाती है—केवल कार्यकाल के माध्यम से नहीं।

#### मूल्य संवर्धन:

- संवैधानिक निकाय संवैधानिक रूप से बनाए जाते हैं।
- सांविधिक निकाय संसद या राज्य विधानमंडलों के अधिनियमों से अपना अस्तित्व प्राप्त करते हैं।
- नियामक स्वतंत्रता अक्सर संस्थान-विशिष्ट होती है।

#### Q5. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:

**अभिकथन (A):** राहत (पर्वतीय) वर्षा सामान्यतः पर्वत अवरोधों के केवल पवन-मुखी (windward) ढलान तक सीमित होती है।

**कारण I:** नम हवा को पर्वत ढलानों के साथ ऊपर उठने के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे एडियाबेटिक शीतलन (adiabatic cooling) और संघनन होता है।

**कारण II:** विमुख (leeward) ढलान पर नीचे उतरने वाली हवा एडियाबेटिक रूप से गर्म होती है, जिससे इसकी सापेक्ष आर्द्रता कम हो जाती है और वर्षा दब जाती है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

- (a) अभिकथन सही है, और कारण I तथा कारण II दोनों सही हैं, और दोनों कारण अभिकथन की सही व्याख्या करते हैं।
- (b) अभिकथन सही है, कारण I सही है लेकिन कारण II सही नहीं है।
- (c) अभिकथन सही है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों गलत हैं।
- (d) अभिकथन गलत है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों सही हैं।

**उत्तर:** (a) अभिकथन सही है, और कारण I तथा कारण II दोनों सही हैं, और दोनों कारण अभिकथन की सही व्याख्या करते हैं।

#### स्पष्टीकरण:

ओरोग्राफिक (राहत) वर्षा तब होती है जब नमी से लदी हवाएं पर्वतीय बाधाओं का सामना करती हैं।

- **कारण I** जबरन उत्थान, एडियाबेटिक शीतलन, संघनन और बादलों के निर्माण के माध्यम से पवन-मुखी तरफ वर्षा के गठन की सही व्याख्या करता है।

- **कारण II** सही ढंग से बताता है कि विमुख (leeward) तरफ वर्षा-छाया प्रभाव (rain-shadow effect) क्यों अनुभव होता है। जैसे ही हवा नीचे उतरती है, यह एडियाबेटिक रूप से गर्म होती है, इसकी नमी धारण करने की क्षमता बढ़ती है और सापेक्ष आर्द्रता कम होती है, जिससे वर्षा रुक जाती है।
- साथ में, दोनों कारण पूरी तरह से बताते हैं कि वर्षा मुख्य रूप से पवन-मुखी ढलानों पर क्यों केंद्रित होती है।

#### मूल्य संवर्धन:

- पवन-मुखी ढलान आमतौर पर अधिक नम होते हैं और घनी वनस्पति का समर्थन करते हैं।
- विमुख ढलान अक्सर वर्षा-छाया की स्थिति और अपेक्षाकृत शुष्क जलवायु का अनुभव करते हैं।
- क्लासिक उदाहरणों में भारत में पश्चिमी घाट और दक्षिण अमेरिका में एंडीज शामिल हैं।

## दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

### Q1. कर्मचारी भविष्य निधि (EPF) योजना, 2026 के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कर्मचारी भविष्य निधि (EPF) एक परिभाषित योगदान वाली सामाजिक सुरक्षा योजना है जिसमें अंतिम सेवानिवृत्ति corpus (कोष) संचयी योगदान और समय के साथ जमा होने वाले ब्याज पर निर्भर करता है।
2. घोषित EPF ब्याज दर में कोई भी वृद्धि स्वचालित रूप से केंद्र सरकार पर यह वैधानिक दायित्व नहीं बनाती है कि वह अपने निवेश रिटर्न की परवाह किए बिना EPFO की भरपाई करे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई नहीं
- (d) दी गई जानकारी से निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a) केवल एक

#### स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** EPF मूल रूप से एक परिभाषित योगदान वाली सेवानिवृत्ति बचत योजना है। सेवानिवृत्ति कोष कर्मचारी के योगदान, नियोक्ता के योगदान (वैधानिक प्रावधानों के अधीन), सेवा की अवधि और EPFO द्वारा घोषित वार्षिक ब्याज पर निर्भर करता है।

- **कथन 2 गलत है।** EPF ब्याज केंद्रीय न्यासी बोर्ड (Central Board of Trustees) द्वारा घोषित किया जाता है और सरकार द्वारा अधिसूचित किया जाता है। केवल इसलिए कि उच्च ब्याज दर घोषित की गई है, सरकार के पास किसी भी कमी की भरपाई करने की कोई स्वचालित वैधानिक देयता नहीं है। ब्याज घोषणा EPFO की वित्तीय स्थिति और निवेश रिटर्न से जुड़ी होती है।

#### मूल्य संवर्धन (Value Addition):

- EPFO श्रम और रोजगार मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
- EPF, 'कर्मचारी भविष्य निधि और अन्य प्रावधान अधिनियम, 1952' द्वारा शासित होता है।
- EPF पेंशन योजनाओं से अलग है क्योंकि संचित कोष ग्राहक का होता है।

#### Q2. बुंडिबग्यो वायरस रोग (BVD) के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

- (a) यह एक फ्लेविवायरस के कारण होता है जो मुख्य रूप से मच्छरों के माध्यम से फैलता है।
- (b) यह इबोला वायरस की प्रजातियों में से एक है जो मनुष्यों में वायरल हेमरेजिक बुखार पैदा करने के लिए जानी जाती है।
- (c) यह मुख्य रूप से दूषित पीने के पानी से फैलता है और तीव्र दस्त के प्रकोप का कारण बनता है।
- (d) यह मुख्य रूप से टिक्स के माध्यम से फैलने वाली एक बैक्टीरियल जूनोटिक बीमारी है।

**उत्तर:** (b) यह इबोला वायरस की प्रजातियों में से एक है जो मनुष्यों में वायरल हेमरेजिक बुखार पैदा करने के लिए जानी जाती है।

#### स्पष्टीकरण:

- बुंडिबग्यो वायरस मान्यता प्राप्त इबोलावायरस प्रजातियों में से एक है।

यह इबोला वायरस रोग (EVD) का कारण बनता है, जो एक गंभीर वायरल हेमरेजिक बुखार है।

- संचरण संक्रमित जानवरों या संक्रमित व्यक्तियों के शारीरिक तरल पदार्थों के संपर्क में आने से होता है।
- यह मच्छर जनित, जल जनित और जीवाणु जनित नहीं है।

#### मूल्य संवर्धन:

- इबोला वायरस फिलोविराडाए (Filoviridae) परिवार से संबंधित हैं।
- मानव-से-मानव संचरण मुख्य रूप से संक्रमित शरीर के तरल पदार्थों के माध्यम से होता है।
- प्रारंभिक अलगाव और संक्रमण नियंत्रण प्राथमिक निवारक उपाय बने हुए हैं।

#### Q3. भारत के पहले निजी कक्षीय रॉकेट 'विक्रम-1' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. विक्रम-1 को छोटे उपग्रहों को लो अर्थ ऑर्बिट (निम्न भू-कक्षा) में स्थापित करने के उद्देश्य से एक निजी भारतीय अंतरिक्ष स्टार्टअप द्वारा विकसित किया गया है।

2. विक्रम-1 का विकास उन अंतरिक्ष-क्षेत्र के सुधारों को दर्शाता है जिन्होंने भारत के अंतरिक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में निजी क्षेत्र की भागीदारी का विस्तार किया है।
3. किसी निजी भारतीय कंपनी द्वारा विकसित हर लॉन्च वाहन को भारतीय लॉन्च सुविधाओं से लॉन्च किए जाने से पहले इसरो को स्वामित्व हस्तांतरित करने की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

उत्तर: (b) केवल दो

स्पष्टीकरण:

- **कथन 1 सही है।** विक्रम-1 को मुख्य रूप से छोटे उपग्रहों को लो अर्थ ऑर्बिट में लॉन्च करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **कथन 2 सही है।** भारत के अंतरिक्ष-क्षेत्र के सुधारों ने लॉन्च वाहन विकास और व्यावसायिक अंतरिक्ष गतिविधियों में निजी कंपनियों द्वारा अधिक भागीदारी को सक्षम किया है।
- **कथन 3 गलत है।** ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है कि लॉन्च से पहले किसी निजी तौर पर विकसित लॉन्च वाहन का स्वामित्व इसरो को हस्तांतरित किया जाना चाहिए। विनियामक अनुमोदन की आवश्यकता होती है, लेकिन स्वामित्व निजी इकाई के पास ही रहता है।

मूल्य संवर्धन:

- विक्रम-1 को 'स्काईरूट एयरोस्पेस' (Skyroot Aerospace) द्वारा विकसित किया गया है।
- IN-SPACe भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी की सुविधा प्रदान करता है।
- कमर्शियल लॉन्च के लिए छोटे उपग्रह प्रक्षेपण वाहन (SSLV) तेजी से महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं।

**Q4. बोरजुली वेटलैंड (आर्द्रभूमि) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. यह असम में स्थित है और ब्रह्मपुत्र बेसिन से जुड़ी बाढ़ के मैदान की आर्द्रभूमि (floodplain wetland) पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा है।
2. राष्ट्रीय संरक्षण कार्यक्रमों के तहत आर्द्रभूमि की मान्यता स्वचालित रूप से रामसर साइट का दर्जा प्रदान करती है।
3. बाढ़ के मैदान की आर्द्रभूमियां भूजल पुनर्भरण, बाढ़ नियंत्रण और प्रवासी पक्षियों के लिए आवास सहायता सहित महत्वपूर्ण पारिस्थितिक कार्य करती हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?



- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई नहीं

**उत्तर:** (b) केवल दो

**स्पष्टीकरण:**

- **कथन 1 सही है।** बोरजुली वेटलैंड असम में स्थित है और एक पारिस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण बाढ़ के मैदान की आर्द्रभूमि का प्रतिनिधित्व करता है।
- **कथन 2 गलत है।** राष्ट्रीय मान्यता स्वचालित रूप से रामसर पदनाम का परिणाम नहीं देती है। रामसर सूची रामसर कन्वेंशन के तहत एक अंतरराष्ट्रीय प्रक्रिया का पालन करती है।
- **कथन 3 सही है।** फ्लडप्लेन वेटलैंड्स जैव विविधता संरक्षण, बाढ़ बफरिंग, भूजल पुनर्भरण और कार्बन भंडारण सहित कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रदान करते हैं।

**मूल्य संवर्धन:**

- असम में कई बाढ़ के मैदान की आर्द्रभूमियाँ हैं जिन्हें स्थानीय रूप से 'बील' (Beels) कहा जाता है।
- आर्द्रभूमियाँ दुनिया के सबसे अधिक उत्पादक पारिस्थितिक तंत्रों में से हैं।
- रामसर पदनाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत पारिस्थितिक मानदंडों पर आधारित है।

**Q5. श्रम बल सहभागिता दर (LFPR) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. श्रम बल सहभागिता दर में नियोजित व्यक्ति और काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध बेरोजगार दोनों व्यक्ति शामिल होते हैं।
2. रोजगार में वृद्धि हमेशा श्रम बल सहभागिता दर में आनुपातिक वृद्धि का परिणाम होती है।
3. यदि हतोत्साहित श्रमिक श्रम बल से बाहर हो जाते हैं, तो आर्थिक विकास की अवधि के दौरान भी श्रम बल सहभागिता दर में गिरावट आ सकती है।
4. बेरोजगारी कम होने पर LFPR और श्रमिक-जनसंख्या अनुपात (WPR) आवश्यक रूप से समान रहते हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

**उत्तर:** (b) केवल दो

**स्पष्टीकरण:**

- **कथन 1 सही है।** श्रम बल में नियोजित व्यक्ति और काम के लिए उपलब्ध या काम की तलाश कर रहे बेरोजगार व्यक्ति दोनों शामिल होते हैं।
- **कथन 2 गलत है।** श्रम बल भाजक (denominator) के भी बदलने के कारण LFPR में आनुपातिक वृद्धि के बिना रोजगार बढ़ सकता है।
- **कथन 3 सही है।** आर्थिक विस्तार के बावजूद श्रम बल छोड़ने वाले हतोत्साहित श्रमिक LFPR को कम कर सकते हैं।
- **कथन 4 गलत है।** श्रमिक-जनसंख्या अनुपात केवल नियोजित व्यक्तियों को मापता है, जबकि LFPR में श्रम बल में नियोजित और बेरोजगार दोनों व्यक्ति शामिल होते हैं।

**Q6. विश्व के रूपरेखा मानचित्र (outline map) पर, अदन की खाड़ी निम्नलिखित में से किस युग्म के बीच स्थित है?**

- (a) यमन और सोमालिया  
 (b) ओमान और ईरान  
 (c) सऊदी अरब और सूडान  
 (d) जिबूती और मिस्र

**उत्तर:** (a) यमन और सोमालिया

**स्पष्टीकरण:**

- अदन की खाड़ी बाब-अल्-मंडेब जलडमरूमध्य के माध्यम से अरब सागर को लाल सागर से जोड़ती है।
- यह अरब प्रायद्वीप पर यमन और हॉर्न ऑफ अफ्रीका में सोमालिया (जिबूती के साथ) के बीच स्थित है।
- यह स्वेज नहर के माध्यम से यूरोप और एशिया को जोड़ने वाले दुनिया के सबसे व्यस्त समुद्री व्यापार मार्गों में से एक बनाता है।

**मूल्य संवर्धन:**

- अरब सागर को लाल सागर से जोड़ता है।
- बाब-अल्-मंडेब जलडमरूमध्य इसका पश्चिमी निकास है।
- वैश्विक ऊर्जा और वाणिज्यिक नौवहन के लिए एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चोकपॉइंट है।

## दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

**GS-1: आधुनिक इतिहास प्रश्न:** व्याख्या कीजिए कि मुगल साम्राज्य के पतन ने किस प्रकार ऐसी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियाँ पैदा कीं जिन्होंने 18वीं शताब्दी के भारत में क्षेत्रीय शक्तियों के उदय को सक्षम बनाया।

**नमूना उत्तर:** मुगल साम्राज्य का पतन केवल एक राजवंश का पतन नहीं था; यह भारत की राजनीतिक संरचना में एक गहरा परिवर्तन था। औरंगजेब के बाद जैसे-जैसे मुगल अधिकार कमजोर हुआ, साम्राज्य ने प्रांतों, राजस्व प्रणालियों और सैन्य समन्वय पर नियंत्रण खो दिया। इससे क्षेत्रीय शक्तियों के उभरने और अपना खुद का अधिकार स्थापित करने के लिए जगह बन गई। इसलिए, 18वीं शताब्दी को केवल पतन के युग के रूप में नहीं, बल्कि राजनीतिक पुनर्गठन के युग के रूप में समझा जाना चाहिए।

राजनीतिक रूप से, निरंतर युद्ध, उत्तराधिकार विवादों और कमजोर केंद्रीय नियंत्रण के कारण मुगल प्रशासनिक प्रणाली तनावपूर्ण हो गई। प्रांतीय गवर्नरों और स्थानीय अभिजात वर्ग ने अधिक स्वायत्तता के साथ काम करना शुरू कर दिया। मनसबदारी और जागीरदारी प्रणालियाँ, जो कभी शाही सत्ता का समर्थन करती थीं, अस्थिर हो गईं। चूंकि केंद्रीय राज्य प्रांतों को अनुशासित करने की अपनी क्षमता खो चुका था, इसलिए बंगाल, अवध, हैदराबाद, मैसूर और मराठा महासंघ के शासकों ने जमीन हासिल की। ये शक्तियाँ अचानक प्रकट नहीं हुईं; वे मुगल पतन से छूटे हुए खालीपन को भरकर उभरीं।

आर्थिक रूप से, साम्राज्य के कमजोर होने से राजस्व संग्रह बाधित हुआ और स्थानीय मध्यस्थों पर निर्भरता बढ़ गई। कई क्षेत्रीय शासकों ने भू-राजस्व सुरक्षित करके, व्यापार मार्गों को नियंत्रित करके और व्यापारी समूहों को आकर्षित करके अपनी शक्ति का निर्माण किया। शहरी केंद्र और बंदरगाह महत्वपूर्ण बने रहे, लेकिन वे नए राजनीतिक संरक्षण के दायरे में आ गए। इससे क्षेत्रीय राज्यों को अपनी राजकोषीय प्रणाली और सेना विकसित करने की अनुमति मिली। इस प्रकार आर्थिक शक्ति शाही केंद्र से अधिक स्थानीयकृत संरचनाओं की ओर स्थानांतरित हो गई।

सामाजिक रूप से, मुगल सत्ता के पतन ने सामुदायिक पहचान और स्थानीय एकजुटता के प्रसार को प्रोत्साहित किया। मराठाओं ने किसान-योद्धा नेटवर्क से ताकत हासिल की, सिखों ने उत्पीड़न और अवसर के जवाब में सैन्य रूप से खुद को संगठित किया, और अन्य समूहों ने क्षेत्रीय परंपराओं के माध्यम से वैधता का निर्माण किया। ये केवल धार्मिक आंदोलन नहीं थे; वे बदलती राजनीतिक स्थितियों की प्रतिक्रियाएं भी थीं।

इस प्रकार, क्षेत्रीय शक्तियों का उदय मुगल पतन का परिणाम और एक नई राजनीतिक व्यवस्था का संकेत दोनों था। 18वीं शताब्दी को भारतीय इतिहास में एक संक्रमणकालीन चरण के रूप में देखा जाना चाहिए, जहाँ सत्ता के कई केंद्रों ने एक शाही केंद्र की जगह ली। इस संक्रमण ने बाद में उन स्थितियों को आकार दिया जिनके तहत यूरोपीय शक्तियों का भारत में विस्तार हुआ।

**GS-2: राजनीति और शासन प्रश्न:** "न्यायिक स्वतंत्रता आवश्यक है, लेकिन लोकतांत्रिक वैधता के लिए जवाबदेही भी उतनी ही आवश्यक है।" भारतीय संदर्भ में चर्चा कीजिए।

**नमूना उत्तर:** न्यायिक स्वतंत्रता और जवाबदेही परस्पर विरोधी नहीं हैं; बल्कि, वे एक ही लोकतांत्रिक सिद्धांत के दो पहलू हैं। स्वतंत्रता यह सुनिश्चित करती है कि न्यायाधीश बिना किसी राजनीतिक दबाव के मामलों का फैसला कर सकें, जबकि जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि इस शक्ति का प्रयोग जिम्मेदारी से, पारदर्शी तरीके से और संवैधानिक सीमाओं के भीतर किया जाए। भारत में, न्यायपालिका में जनता का विश्वास बनाए रखने के लिए दोनों आवश्यक हैं।

न्यायिक स्वतंत्रता कानून के शासन के लिए केंद्रीय है। संविधान कार्यकाल की सुरक्षा, निश्चित सेवा शर्तों और कार्यपालिका से अलगाव के माध्यम से न्यायाधीशों की रक्षा करता है। ये सुरक्षा उपाय न्यायपालिका को मनमाने अधिकार के खिलाफ एक जांच के रूप में कार्य करने की अनुमति देते हैं। समय के साथ, भारतीय अदालतों ने अधिकारों की रक्षा की है, कार्यकारी कार्रवाई की समीक्षा की है, और संवैधानिक व्याख्या का विस्तार किया है। स्वतंत्रता के बिना, न्यायपालिका लोकतंत्र की रक्षा करने की अपनी क्षमता खो देगी।

साथ ही, जांच-पड़ताल से पूर्ण अलगाव चिंताएं पैदा कर सकता है। न्याय में देरी, नियुक्तियों में पारदर्शिता की कमी और प्रशासनिक निर्णयों में असंगति संस्थागत जवाबदेही पर सवाल उठाती है। नागरिक यह उम्मीद करते हैं कि न्यायपालिका न केवल निष्पक्ष हो, बल्कि कुशल और संवैधानिक मूल्यों के प्रति जवाबदेह भी हो। जवाबदेही का मतलब कार्यपालिका या विधायिका का हस्तक्षेप नहीं है; इसका मतलब संस्थागत आत्म-सुधार, खुलापन और नैतिक जिम्मेदारी है।

भारत में, चुनौती स्वायत्तता को पारदर्शिता के साथ संतुलित करने की है। न्यायिक नियुक्तियाँ निष्पक्ष और विश्वसनीय होनी चाहिए। अदालत का प्रशासन अधिक कुशल होना चाहिए। महत्वपूर्ण संस्थागत निर्णयों के कारण स्पष्ट होने चाहिए। बेहतर बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से मामलों के निपटान में सुधार किया जाना चाहिए। ये सुधार स्वतंत्रता को कमजोर किए बिना जन विश्वास को मजबूत कर सकते हैं।

एक लोकतंत्र को ऐसी न्यायपालिका की आवश्यकता है जो स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए पर्याप्त मजबूत हो, लेकिन जवाबदेह रहने के लिए इतनी विनम्र हो। जवाबदेही के बिना स्वतंत्रता से अस्पष्टता पैदा हो सकती है, जबकि स्वतंत्रता के बिना जवाबदेही से राजनीतिक कब्जा हो सकता है। इसलिए भारतीय संवैधानिक प्रणाली को दोनों को सुरक्षित रखना चाहिए। न्यायिक वैधता केवल शक्ति पर नहीं, बल्कि भरोसे पर निर्भर करती है।

अंत में, न्यायिक स्वतंत्रता संवैधानिक न्याय का आधार है, जबकि जवाबदेही लोकतांत्रिक वैधता का आधार है। भारत को न्यायपालिका में सुधार जारी रखना चाहिए जो दोनों मूल्यों को एक साथ मजबूत करते हैं।

**GS-3: अर्थव्यवस्था प्रश्न:** विश्लेषण कीजिए कि भारत में मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (inflation targeting) ने मौद्रिक नीति संचरण, मूल्य स्थिरता और विकास व्यापार-बंद (growth trade-offs) को कैसे प्रभावित किया है।

**नमूना उत्तर:** मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण भारत में मौद्रिक नीति का एक प्रमुख ढांचा बन गया है। इसका मुख्य उद्देश्य विकास का समर्थन करने के लिए पर्याप्त लचीलापन देते हुए मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखना है। इस ढांचे ने नीतिगत स्पष्टता में सुधार किया है, विश्वसनीयता को मजबूत किया है और मौद्रिक निर्णयों को अधिक पारदर्शी बनाया है। हालाँकि, इसकी प्रभावशीलता भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक विशेषताओं पर निर्भर करती है।

मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण का एक प्रमुख प्रभाव उम्मीदों का एंकरिंग (anchoring) रहा है। जब परिवारों, फर्मों और बाजारों का मानना होता है कि केंद्रीय बैंक मूल्य स्थिरता के लिए प्रतिबद्ध है, तो उनके निरंतर मुद्रास्फीति की उम्मीद करने की संभावना कम होती है। इससे विश्वास में सुधार होता है और मजदूरी-मूल्य चक्र (wage-price spiral) की संभावना कम होती है। यह मौद्रिक नीति को अधिक विश्वसनीयता भी देता है, जो भारत जैसी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण है जहाँ मुद्रास्फीति अक्सर खाद्य और ईंधन के झटकों से प्रेरित होती है।

मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ने नीतिगत संचरण के तर्क में भी सुधार किया है। ब्याज दर में परिवर्तन अब अधिक नियम-आधारित प्रणाली के माध्यम से संचालित होते हैं, जो ऋण की मांग, उधार लेने की लागत और वित्तीय स्थितियों को प्रभावित करते हैं। हालाँकि, कमजोर बैंक बैलेंस शीट, अनौपचारिक ऋण बाजार और आपूर्ति-पक्ष की बाधाओं जैसे संरचनात्मक मुद्दों के कारण भारत में संचरण अभी भी असमान है। इसका मतलब यह है कि अकेले ब्याज दर नीति सभी प्रकार की मुद्रास्फीति को नियंत्रित नहीं कर सकती है।

इस ढांचे ने विकास-मुद्रास्फीति के व्यापार-बंद को भी उजागर किया है। उच्च मुद्रास्फीति के समय में, केंद्रीय बैंक को दरों को बढ़ाने की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन इससे उपभोग और निवेश धीमा हो सकता है। कमजोर मांग की अवधि में, सख्त नीति विकास को नुकसान पहुँचा सकती है भले ही मुद्रास्फीति मांग-संचालित न हो। यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था में मौद्रिक नीति की सीमाओं को दर्शाता है जहाँ मुद्रास्फीति अक्सर खाद्य की कमी, रसद समस्याओं या वैश्विक मूल्य झटकों से उत्पन्न होती है।

इन सीमाओं के बावजूद, मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ने महत्वपूर्ण लाभ पहुँचाए हैं। इसने नीतिगत अनिश्चितता को कम किया है, संचार में सुधार किया है और मूल्य स्थिरता को एक अधिक दृश्यमान लक्ष्य बनाया है। इसने सरकार और केंद्रीय बैंक को व्यापक आर्थिक प्रबंधन पर अधिक सावधानी से समन्वय करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है।

अंत में, मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण ने भारत के मौद्रिक ढांचे को मजबूत किया है, लेकिन यह कोई संपूर्ण समाधान नहीं है। स्थिर कीमतों के लिए न केवल ध्वनि मौद्रिक नीति की आवश्यकता होती है, बल्कि खाद्य आपूर्ति प्रबंधन, राजकोषीय अनुशासन और संरचनात्मक सुधारों की भी आवश्यकता होती है। व्यापार-बंद जटिल बने रहने के बावजूद, इस ढांचे ने नीति की गुणवत्ता में सुधार किया है।

**GS-4: नीतिशास्त्र (Ethics) प्रश्न:** नैतिक शासन केवल भ्रष्टाचार को रोकने के बारे में नहीं है, बल्कि सार्वजनिक सेवा में करुणा, उत्तरदायित्व (responsiveness) और गरिमा सुनिश्चित करने के बारे में भी है। परीक्षण कीजिए।

**नमूना उत्तर:** नैतिक शासन भ्रष्टाचार-विरोधी की तुलना में एक व्यापक अवधारणा है। हालांकि रिश्तखोरी, कार्यालय के दुरुपयोग और पक्षपात को रोकना आवश्यक है, अच्छे शासन के लिए सार्वजनिक सेवा में करुणा, उत्तरदायित्व और गरिमा की भी आवश्यकता होती है। एक सार्वजनिक प्राधिकरण कानूनी रूप से सही हो सकता है और फिर भी यदि वह नागरिकों के साथ अपने व्यवहार में उदासीन, देरी करने वाला या अपमानजनक है, तो वह नैतिक रूप से कमजोर हो सकता है।

करुणा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि राज्य कमजोर परिस्थितियों में लोगों की सेवा करता है। नागरिक सरकार के पास केवल अधिकारों के लिए नहीं, बल्कि बीमारी, गरीबी, आपदा या विस्थापन के दौरान मदद के लिए भी आते हैं। ऐसी स्थितियों में, नियमों का सख्त यांत्रिक अनुप्रयोग नैतिक जिम्मेदारी को प्रतिबिंबित करने में विफल हो सकता है। एक दयालु प्रशासन का मतलब पक्षपात नहीं है; इसका मतलब कानूनों और प्रक्रियाओं को लागू करते समय मानवीय संवेदनशीलता है।

उत्तरदायित्व (responsiveness) उतना ही महत्वपूर्ण है। शासन में देरी अपने आप में अन्याय का एक रूप बन सकती है। एक फाइल को लंबित रखना, किसी शिकायत को नजरअंदाज करना या कल्याणकारी लाभ में देरी करना नागरिकों को सीधे गलत काम करने जितना ही नुकसान पहुँचा सकता है। इसलिए नैतिक शासन के लिए समय पर निर्णय लेने, सक्रिय सुनने, शिकायत निवारण और कर्तव्य की भावना की आवश्यकता होती है। लोक सेवकों को यह समझना चाहिए कि दक्षता केवल प्रशासनिक नहीं है; यह नैतिक भी है।

गरिमा नैतिक सार्वजनिक सेवा की नींव है। जाति, वर्ग, लिंग या स्थिति की परवाह किए बिना प्रत्येक नागरिक के साथ सम्मान के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। एक अधिकारी का स्वर, व्यवहार और दृष्टिकोण मायने रखता है क्योंकि राज्य को कभी भी उन लोगों को अपमानित नहीं करना चाहिए जिनकी वह सेवा करता है। भले ही कानून को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए, लेकिन प्रवर्तन का तरीका मानव गरिमा को संरक्षित करना चाहिए।

पारदर्शिता, ऑडिट, ई-गवर्नेंस और सतर्कता तंत्र जैसी भ्रष्टाचार-विरोधी प्रणालियाँ आवश्यक हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं। नैतिक शासन नैतिक साहस, सहानुभूति, निष्पक्षता और जन कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता पर भी निर्भर करता है। सर्वश्रेष्ठ प्रशासक अखंडता को मानवता के साथ मिलाते हैं।



अंत में, नैतिक शासन केवल भ्रष्टाचार से बचने के बारे में नहीं है। यह एक ऐसी सार्वजनिक प्रणाली के निर्माण के बारे में है जो निष्पक्ष, संवेदनशील, त्वरित और आदरणीय हो। एक वास्तव में नैतिक राज्य न केवल नियमों का पालन करता है, बल्कि हर फैसले और बातचीत में मानवीय गरिमा को भी बरकरार रखता है।

**समसामयिक मामले (Current Affairs): भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन प्रश्न:** इंडो-पैसिफिक स्थिरता, आर्थिक सुरक्षा और तकनीकी सहयोग के संदर्भ में 16वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन के सामरिक महत्व की चर्चा कीजिए।

**नमूना उत्तर:** 16वें भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन का सामरिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह एशिया में सबसे स्थिर और विश्वसनीय साझेदारियों में से एक को मजबूत करता है। भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति श्रृंखला अनिश्चितता और तेजी से तकनीकी परिवर्तन से चिह्नित अवधि में, भारत और जापान एक अधिक सुरक्षित और लचीले क्षेत्रीय आदेश को आकार देने के लिए एक साथ काम कर रहे हैं। यह शिखर सम्मेलन न केवल द्विपक्षीय संबंधों के लिए बल्कि व्यापक इंडो-पैसिफिक पर्यावरण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

पहला, शिखर सम्मेलन का इंडो-पैसिफिक स्थिरता के लिए महत्व है। भारत और जापान एक स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित क्षेत्र में साझा हित रखते हैं। दोनों देश समुद्री सुरक्षा, शांतिपूर्ण विवाद समाधान और क्षेत्र में रणनीतिक संतुलन का समर्थन करते हैं। उनका सहयोग एक स्पष्ट संदेश भेजता है कि लोकतांत्रिक और जिम्मेदार शक्तियां स्थिरता बनाए रखने के लिए मिलकर काम कर सकती हैं। यह महान शक्ति की प्रतिद्वंद्विता और अनिश्चितता के युग में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

दूसरा, शिखर सम्मेलन आर्थिक सुरक्षा को मजबूत करता है। बुनियादी ढांचे, निवेश और औद्योगिक विकास में जापान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार है। जैसे-जैसे वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएं अधिक संवेदनशील होती जाती हैं, भारत विविध और विश्वसनीय साझेदारियों की तलाश करता है। जापान प्रौद्योगिकी, पूंजी और विनिर्माण तथा कनेक्टिविटी में दीर्घकालिक सहयोग के माध्यम से इस प्रयास का समर्थन कर सकता है। आज आर्थिक सुरक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा से अलग नहीं है, और यह शिखर सम्मेलन उस वास्तविकता को दर्शाता है।

तीसरा, शिखर सम्मेलन तकनीकी सहयोग को गहरा करता है। डिजिटल प्रौद्योगिकियों, स्वच्छ ऊर्जा, गतिशीलता (mobility), स्मार्ट बुनियादी ढांचे, सेमीकंडक्टर और नवाचार में भारत और जापान की संभावनाएं बढ़ रही हैं। ऐसा सहयोग दोनों देशों को भविष्य की प्रतिस्पर्धा का निर्माण करते हुए अस्थिर बाहरी स्रोतों पर निर्भरता कम करने में मदद करता है। प्रौद्योगिकी अब राज्य की शक्ति का एक प्रमुख स्तंभ है, और इस क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग रणनीतिक रूप से मूल्यवान है।

यह शिखर सम्मेलन विश्वास, निरंतरता और साझा दृष्टिकोण पर आधारित एक परिपक्व राजनयिक संबंध को भी दर्शाता है। लेन-देन वाली साझेदारियों के विपरीत, भारत-जापान संबंध दीर्घकालिक अभिसरण पर बने हैं। इससे रिश्ते को अधिक स्थायित्व और रणनीतिक गहराई मिलती है।

अंत में, 16th भारत-जापान वार्षिक शिखर सम्मेलन महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक सामान्य इंडो-पैसिफिक ढांचे के भीतर सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी को एक साथ लाता है। यह क्षेत्रीय स्थिरता को मजबूत करता है, आर्थिक लचीलेपन का समर्थन करता है, और दोनों देशों को अधिक अनिश्चित भविष्य के लिए तैयार करता है।

